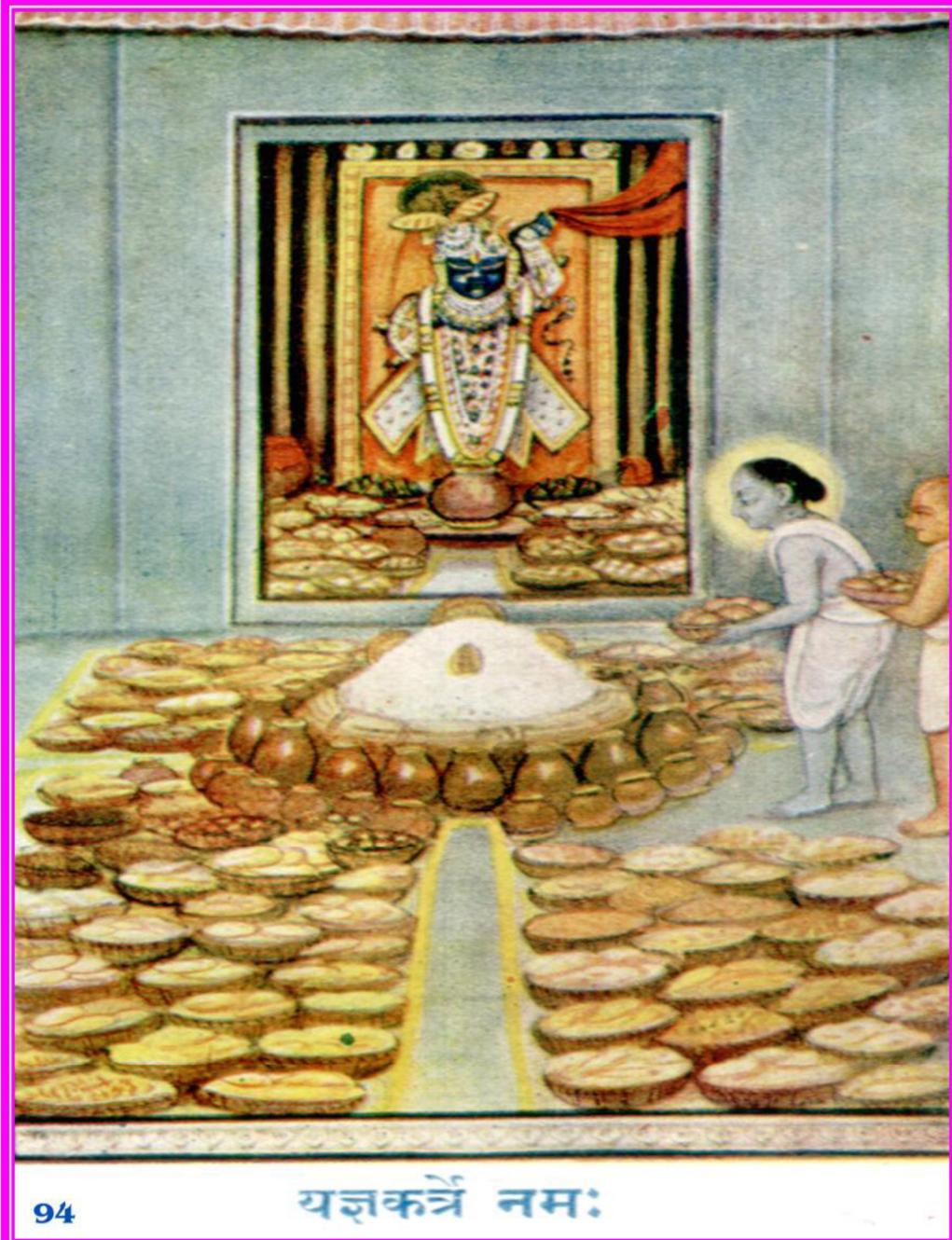




## आत्मराश्ट्रीय पुस्तकार्थि वैष्णव परिषद्



## ६४ - यज्ञ कर्ता

श्रीआचार्यજ्ञाना कर्ता हे.

### अर्थ - यस्त्रि - संगति :

श्रीआचार्यज्ञाने भक्तिभागीय यज्ञ करवावाणा हे. आपशी श्रौत यज्ञ पाणु डरे हे. जेवी रीते गोवर्धन यज्ञ करवानी विधि भतावनार भगवान् ४ हे, तेवी रीते श्रीआचार्यज्ञाने गोवर्धन पर्वत उपर धिराज्ञा श्रीनाथज्ञाना अनन्कुट महोत्सवनी विधिनुं व्यवहारिक इप करी भताव्युं, काराणु के गोवर्धनयागनी विधि तथा निर्भाणु श्रीशुक्लेवज्ञ गोवर्धन लीलाना वर्जनमां “सर्व यथाऽऽह मधुसूदनः” भगवाने कर्युं होवानुं करे हे अने तेथी गोवर्धनयज्ञना कर्ता स्वयं भगवान् हे, अने श्रीआचार्यज्ञाने भगवानना भुज्ञप होवाथी यज्ञ रहस्यनुं आपशीने विशेष ज्ञान हे.

श्रीनाथज्ञानो पहेलो अनन्कुट श्रीआचार्यज्ञाने सण्ठी (भात) आरोगावी कर्यो हतो अने तेथी आप यज्ञकर्ता हे.

भगवन्मुण्डारविन्द स्वरूपथी यज्ञभोज्ता अने भगवन्मुण्डारविन्दना अवतारङ्गभान् यज्ञकर्ता ए खंने रीते श्रीआचार्यज्ञ स्वयं हे, परंतु भोज्ता नित्य लीला संबंधी हे. ज्यारे कर्तापाणुं सभय विशेषे आप प्रगट करे हे. जेथी आपशीना “यज्ञभोज्ता” अने “यज्ञकर्ता” ए खंने नाभोमां “यज्ञकर्ता” नाम पहेलुं होव जोईअे अने “यज्ञभोज्ता” नाम पाढी होवुं जोईअे तेवा विचारने स्थान नथी. आ नाम “वैराग्य - धर्म” सूचक हे.

### यस्त्रि - परिधय :

श्रीनाथज्ञाने सण्ठी भात नो प्रथम अनन्कुट भोग श्रीआचार्यज्ञ धरी रहा हे.

### नाम - संगति :

आवा भक्ति भागीय यज्ञ करीने सेवकोने विशेष प्रकारनी सिद्धिनुं केवुं दान करे हे. ते जग्नाववा. “यतुर्वर्गविशारदः” नाम करे हे.